085/X/SA2/24/A1

विद्यार्थी उत्तर-पुस्तिका में मुख पृष्ठ पर कोड नं. अवश्य लिखें।

कक्षा - X

हिन्दी

(पाठ्यक्रम - ब)

निर्धारित समय : **3** घंटे] [अधिकतम अंक : **80**

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **10** हैं।
- प्रश्न-पत्र में बाएँ हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **18** प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले उस प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए **15** मिनट का समय दिया गया है।

निर्देश :

(i) इस प्रश्न-पत्र के **चार** खंड हैं — **क, ख, ग** और **घ**।

(ii) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमशः दीजिए।

खंड 'क'

1. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उचित उत्तर वाले विकल्प लिखिए।** 1x5=5

पूर्वजों ने यदि एक तरफ हमें अनेक सांस्कृतिक उत्तरदायित्व विरासत में दिए हैं, तो दसरी तरफ अनेक जीवन मूल्यों की रक्षा का दायित्व भी सौंपा है। यदि हम अधिकारों पर हक जताएँ और कर्तव्यों की अवहेलना करें तो समाज में अमानवीय प्रवृत्तियों का बोलबाला हो जाएगा। अधिकारों पर अधिकार तभी शोभा देगा जब कर्त्तव्यों के प्रति कर्त्तव्य की पालना की जाएगी। जीवन मूल्य किसी भी समाज की नींव की ईंट है, समाज का मेरुदंड है, समाज का आदर्श हैं। इन जीवन मूल्यों में अनास्था का अर्थ है - इनका ह्रास पतन, नैतिकता की गिरावट। इनके गिरने का अर्थ है समाज की नींव हिलना। यदि समाज का अस्तित्व मिटा, तो व्यक्ति का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। कारण - व्यक्ति समाज पर निर्भर है । अत: अपने अस्तित्व की रक्षा हेतु जीवन मूल्यों की पहचान करें तथा उनका पालन करें, तभी मानव कल्याण संभव है। स्वयं से पूछिए आपने राष्ट्र के लिए क्या किया है? न कि राष्ट्र ने आपको क्या दिया है।

(1) समाज में अमानवीय प्रवृत्तियों का बोलबाला कब हो जाता है?
- (i) जब समाज में सब कर्त्तव्यपरायण हो जाते हैं।
- (ii) जब लोग अपने अधिकारों की माँग करने लगते हैं।
- (iii) जब हम कर्त्तव्यों की अपेक्षा अधिकारों पर बल देने लगते हैं।
- (iv) जब हम अधिकार चाहते हैं और कर्त्तव्यों की अवहेलना करते हैं।

(2) मानव कल्याण किसमें है?
- (i) मिलजुल कर रहने में।
- (ii) कर्त्तव्यों का निर्वाह करने में।
- (iii) जीवन मूल्यों की पहचान कर उनका अनुपालन करने में।
- (iv) उपर्युक्त सभी।

(3) जीवन मूल्यों के बारे में क्या सच नहीं है -
- (i) समाज की आधार शिला है।
- (ii) समाज की रीढ़ हैं।
- (iii) समाज का अधिकार है।
- (iv) समाज का आदर्श हैं।

(4) जीवन मूल्यों की अवहेलना से क्या होगा?
- (i) नैतिकता का पतन।
- (ii) कर्त्तव्यों का पालन।
- (iii) अधिकारों की रक्षा।
- (iv) उत्तरदायित्वों की अवहेलना।

(5) मनुष्य का अस्तित्व कब खतरें में पड़ सकता है?
- (i) विश्वयुद्ध होने पर।
- (ii) जीवनमूल्यों की अवहेलना होने पर।
- (iii) समाज के न रहने पर।
- (iv) कर्तव्यपालन न करने पर।

2. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पुछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।** 1x5=5

सफलता मन की जीत है, असफलता मन की हार। यह सृष्टि का अटल नियम है कि सफलता-असफलता एक दूसरे के अनुगामी है और परस्पर संबंधित भी; लेकिन इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि सदैव असफलता ही मिलेगी। मन की चिंतन शक्ति जब नकारात्मक रूप लेती है, शिथिल होती है, भयग्रस्त हो जाती है तब ही असफलता मिलती है। निराश मन को प्रबुद्ध और चैतन्य व्यक्तियों के कथन, उनके जीवन के प्रसंग और उदाहरण नई शक्ति देते हैं। किसी पानी से आधा भरे गिलास को दो रूपों में कहा जाता है। आधा भरा गिलास, आधा खाली गिलास। आधा खाली नकारात्मक रूप को उभारता है जबकी आधा भरा कहना सकारात्मक रूप को बताता है। संस्कृत की एक सूक्ति है जिसका भाव है काटा हुआ वृक्ष फिर बढ़ने लगता है, क्षीण हुआ चन्द्रमा भी फिर वृद्धि को प्राप्त होता है। इसी प्रकार विचार करके बुद्धिमान व्यक्तियों की हिम्मत भी मुँह नही मोड़ती और वे आपत्ति, विघ्न, विषाद, नैराश्य से विचलित नहीं होते। रस्सी को साँप मान लेना मन का भय है।

(1) सफलता और असफलता क्या है?
  (i) मन की जीत-हार।   (ii) एक-दूसरे से संबद्ध।
  (iii) एक के पीछे एक आने वाले।   (iv) उपर्युक्त सभी।

(2) असफलता मनुष्य को कब दबोच लेती है?
  (i) मन की चिंतन शक्ति जब नकारात्मक रूप ले लेती है।
  (ii) तन-मन शिथिल हो जाता है।
  (iii) मन भयग्रस्त हो, हिम्मत हार जाता है।
  (iv) उपर्युक्त सभी।

(3) आधा भरा गिलास, किस दृष्टिकोण का प्रतीक है?
  (i) सकारात्मक दृष्टिकोण का।   (ii) नकारात्मक दृष्टिकोण का।
  (iii) विवेचनात्मक दृष्टिकोण का।   (iv) कल्याणकारी दृष्टिकोण का।

(4) 'कदापि' और 'सदैव' का संधिविच्छेद है-
  (i) कदा+पि, सदा+एव   (ii) कदा+अपि, सदा + इव
  (iii) कद+अपि, सद+एव   (iv) कदा+अपि, सदा+एव

(5) बुद्धिमान व्यक्ति की हिम्मत क्यों नही टूटती?
  (i) वह पढ़ालिखा, सचेत व्यक्ति होता है।
  (ii) वह बुद्धिजीवी होता है।
  (iii) वह विपत्ति, विषाद, आदि से विचलित नहीं होता।
  (iv) उसका ज्ञान अपार और विस्तृत होता है।

3. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर लिखे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए। 1x5=5

यह हार एक विराम है
जीवन महा संग्राम है
तिल-तिल मिटूँगा पर दया की भीख मैं लूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।
स्मृति सुखद प्रहरों के लिए
अपने खंडहरों के लिए
यह जान लो मैं विश्व की संपत्ति चाहूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।
क्या हार में, क्या जीत में
किंचित नहीं भयभीत मैं
संघर्ष पथ पर जो मिले, यह भी सही, वह भी सही
वरदान माँगूँगा नही।।
लघुता न अब मेरी छुओ
तुम हो महान, बने रहो
अपने हृदय की वेदना, मैं व्यर्थ त्यागूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।
चाहे हृदय को ताप दो
चाहे मुझे अभिशाप दो
कुछ भी करो, कर्त्तव्य पथ से किंतु भागूँगा नहीं।
वरदान माँगूँगा नहीं।।

(1) कविता कवि के स्वभाव की किन विशेषताओं को उजागर कर रही है-

(i) निजता और अक्खड़पन। (ii) स्वाभिमान और आत्मविश्वास।

(iii) त्याग और बलिदान। (iv) अभिशाप और वरदान।

(2) जीवन को संग्राम क्यों माना है-

(i) हम किसी न किसी से लड़ते रहते हैं। (ii) हम शांती से नहीं बैठ सकते।

(iii) जीवन भर संघर्ष करना पड़ता है। (iv) जीवनभर अशांती झेलनी पड़ती है।

(3) हार्दिक पीड़ा व प्रताड़ना का अभिशाप सहकर भी कवि क्या नहीं करेगा?

(i) संघर्ष नहीं करेगा। (ii) सुविधाएँ नहीं चाहेगा।

(iii) किसी पर कृपा नहीं करेगा। (iv) सहायता, कृपा या वरदान नहीं माँगेगा।

(4) जीवन संग्राम की यातना में तिल- तिल मरकर भी कवि किस बात पर दृढ है-

(i) भयभीत होकर हिम्मत नहीं हारेगा। (ii) अपने अहंकार को चोट नहीं पहुँचने देगा।

(iii) वह दया की भीख नहीं माँगेगा। (iv) समझौता नहीं करेगा।

(5) कवि को संघर्ष के मार्ग पर चलते हुए

(i) जीत ही स्वीकार्य है। (ii) हार नहीं होनी चाहिए।

(iii) भयभीत होना ठीक नहीं। (iv) जीत - हार दोनों स्वीकार्य हैं।

4. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर प्रश्नों के उचित उत्तर वाले विकल्प लिखिए - **1x5=5**

सच्चाई यह है कि

केवल ऊँचाई ही काफी नहीं होती
सबसे अलग-थलग, परिवेश से पृथक
अपनों से कटा-बँटा,
शून्य में अकेला खड़ा होना
पहाड़ की महानता नहीं, मजबूरी है
ऊँचाई और गहराई में
आकाश-पाताल की दूरी है।

जो जितना उँचा होता है, उतना ही एकाकी होता है
हर भार को स्वयं ढोता है
चेहरे पर मुस्कानें चिपका, मन ही मन रोता है।
जरुरी है कि ऊँचाई के साथ विस्तार भी हो,
जिससे मनुष्य, ठूँठ-सा खड़ा न रहे
औरों से मिले, किसी को साथ ले, संग चले।

धरती को बौनों की नहीं,
ऊँचे कद के इन्सानों की जरुरत है
इतने ऊँचे कि आसमान को छू लें
नए नक्षत्रों में प्रतिभा के बीज बो दें
किंतु इतने ऊँचे भी नहीं, कि पाँव तले दूब ही न जमे
कोई काँटा न चुभे, कोई कली न खिले।
मेरे प्रभु! मुझे इतनी ऊँचाई कभी मत देना
गैरों को गले न लगा सकूँ, इतनी रुखाई कभी मत देना।

(1) ऊँचा होना पहाड़ की विवशता कैसे है ?

(i) वह स्थान नहीं बदल सकता। (ii) वह परिवेश से पृथक है।

(iii) वह नितान्त अकेला है। (iv) वह गहरा नहीं है।

(2) सामर्थ्यवान व ऊँचे पदासीन, सफल लोगों का द्वंद क्या है ?

(i) वे सफल होकर भी अकेले होते हैं।

(ii) वे बाहरी दुनिया में सदैव मुसकराते दिखाई देते है।

(iii) मानसिक पीड़ा का दर्द अकेले ही झेलते व मन ही मन रोते हैं।

(iv) उपर्युक्त सभी।

(3) कवि के अनुसार धरती पर बौने लोग कौन हैं ?

(i) जो कद में छोटे हैं।

(ii) जो छोटे राष्ट्र के वासी हैं।

(iii) जो सामर्थ्यवान होकर भी दूसरों के काम नहीं आते।

(iv) जो मनुष्य-मनुष्य में छोटे-बड़े का भेदभाव करते हैं।

(4) 'पाँव तले दूब ही न उगे' का भावार्थ है -

(i) दूब को सर्वत्र उगाया जाना चाहिए।

(ii) छोटे पिछड़े लोगों को भी बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए।

(iii) पाँव इतना दृढ़ हो कि उसके नीचे कुछ भी न उग सके।

(iv) वास्तविकता पहचानी न जा सके।

(5) कवि के अनुसार 'ऊँचाई' की सार्थकता है -

(i) लम्बा-ऊँचा होना। (ii) ताकतवर, बलशाली होना।

(iii) सामर्थ्यवान होना। (iv) सबको साथ लेकर चलना।

खंड 'ख'

5. (1) मैं <u>पढ़ सकता हूँ</u>, रेखांकित पदबंध है - **1**

(क) संज्ञा (ख) क्रिया विशेषण

(ग) क्रिया (घ) विशेषण

(2) <u>भारत</u> विकासशील देश है। रेखांकित का पद परिचय है - **1**

(क) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, बहुवचन

(ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन

(ग) जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन

(घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन

(3) हमेशा बोलने वाले तुम आज चुप क्यों हो ? वाक्य में सर्वनाम पदबंध है - **1**

(क) हमेशा बोलने वाले (ख) तुम आज चुप क्यों हो

(ग) हमेशा बोलने वाले तुम (घ) हमेशा बोलने वाले तुम आज

(4) <u>यह</u> बालक पुरस्कार जीत सकता है। रेखांकित का पद परिचय है - **1**

(क) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन

(ख) सार्वनामिक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन

(ग) गुणवचक विशेषण, एकवचन, पुल्लिंग

(घ) संकेतवाचक विशेषण, अन्यपुरुष, एकवचन

6. (1) 'मुझे ऐसा पुत्र चाहिए जो आज्ञाकारी हो।' रचना की दृष्टि से वाक्य भेद है : **1**

(क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य

(ग) मिश्र वाक्य (घ) साधारण

(2) संयुक्त वाक्य छाँटिए **1**

(क) परिश्रम करो, अन्यथा पछताओगे

(ख) पछताने से बचने के लिए परिश्रम करो

(ग) जो पछताएगा वही परिश्रम करेगा

(घ) यदि परिश्रम नहीं करोगे तो पछताओगे

(3) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र वाक्य है - **1**

(क) दंड क्षमा कराने के लिए प्रार्थना पत्र लिखो।

(ख) ऐसा पत्र लिखो, जिसमें दंड क्षमा कराने के लिए प्रार्थना हो

(ग) प्रार्थना पत्र लिखकर दंड क्षमा कराओ

(घ) प्रार्थना पत्र लिखो और दंड क्षमा करवाओ।

(4) खूब मेहनत करने पर भी मजदूर को उसका लाभ नहीं मिलता' इसका संयुक्त वाक्य बनेगा - **1**

(क) मज़दूर मेहनत करके भी लाभ नहीं पाता।

(ख) मज़दूर मेहनत करता है और लाभ नहीं पाता।

(ग) जब मजदूर खूब मेहनत करता है तो उसे उसका लाभ क्यों नहीं मिलता।

(घ) जो मजदूर मेहनत करता है उसे उसका लाभ नहीं मिलता

7. (1) 'अन्यान्य' का संधि विच्छेद है - **1**

(क) अन्य + अन्य (ख) अन्या + अन्य

(ग) अन्य + आन्य (घ) अ + न्याय

(2) 'साधु + उपदेश' की संधि है - **1**

(क) साधोपदेश (ख) साधूपदेश

(ग) साधौपदेश (घ) साधापदेश

(3) 'करकमल' समस्त पद का विग्रह है - **1**

(क) कर के समान कमल (ख) कमल के समान कर

(ग) कर और कमल (घ) इनमें से कोई नहीं

(4) 'भूख से मरा' का समस्त पद व समास है - **1**

(क) भुखमरा - अव्ययीभाव (ख) भुखमरा - कर्मधारय

(ग) भुखमरा - तत्पुरुष (घ) भुखमरा - द्वन्द्व

8. (1) रात - दिन .... भी वह कक्षा में प्रथम न आ सका। रिक्त स्थान की पूर्ति उचित मुहावरे से करें। **1**

(क) आँखें फोड़कर (ख) लगातार पढ़कर

(ग) हेकड़ी जताकर (घ) घूम-घूमकर

(2) 'हथेली पर सरसों नहीं जमती' लोकोक्ति का अर्थ है - **1**

(क) खेती करने में सबको सफलता नहीं मिलती

(ख) जल्दी में कोई काम नहीं बनता

(ग) हमारा व्यवहार सरलता से आ हो

(घ) सरसों हाथ पर देर से जमती है।

(3) 'साये से भागना' मुहावरे का अर्थ है – **1**

(क) सहम जाना (ख) भटक जाना

(ग) ड़रकर दूर रहना (घ) अँधेरे में रहना

(4) 'भागते भूत की लंगोटी भली' लोकोक्ति का अर्थ छाँटिए – **1**

(क) कुछ न मिलने से थोड़ा मिलना अच्छा है

(ख) अचानक लाभ होना

(ग) संतोषी होना

(घ) व्यर्थ की चिंता करना

9. (1) निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है – **1**

(क) यह बात कहने पर कठिनाई है (ख) आप लौटकर कब आओगे ?

(ग) वह चुपचाप दम साधे पड़ा रहा (घ) उसके तो सारे इरादों पर पानी बह गया।

(2) निम्नलिखित में अशुद्ध वाक्य है – **1**

(क) उसने राम से पूछा (ख) जंगल में घना अंधकार है।

(ग) जैसा करोगे वैसा भरोगे (घ) दशरथ को चार पुत्र थे।

(3) निम्नलिखित में शुद्ध वाक्य है – **1**

(क) अक्ल के घोड़े चराने में तो तुम जैसा कोई नहीं

(ख) देश को प्राण कुर्बान करना सैनिक का धर्म है।

(ग) उन्होंने एक मित्र का परिचय करवाया।

(घ) उसका प्राण निकल रहा है।

(4) निम्नलिखित में अशुद्ध वाक्य है – **1**

(क) मैं बाजार जा रहा हूँ।

(ख) उसने राम से पूछा।

(ग) मेरे मुंबई जाने में केवल दो दिन शेष है।

(घ) जैसा करोगे उतना ही भरोगे

खंड 'ग'

10. पद्यांश के आधार पर प्रश्नों के उचित उत्तर वाले विकल्प लिखिए – **1x5=5**

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परन्तु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।
वही पशु प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।
उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार से सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।

(1) 'सुमृत्यु' किसे कहा है?

(क) शुभ दिन में मृत्यु (ख) बिना डरे मृत्यु

(ग) सब याद करें ऐसी मृत्यु (घ) भगवान को याद करते हुए मृत्यु

(2) पशुप्रवृत्ति है -

(क) अपना भरण पोषण (ख) अपने परिवार का भरण पोषण

(ग) अपने झुंड में रहना (घ) चुपचाप चरते रहना

(3) कवि किसे मनुष्य मानता है?

(क) जो परोपकारी हो (ख) जो वीर और साहसी हो

(ग) जो दूसरों के लिए जीवन दे दे (घ) जो प्रसिद्ध हो

(4) उदार से क्या अभिप्राय है?

(क) स्वच्छंद और स्वतंत्र (ख) कृपालु और सहनशील

(ग) दानशील और सहृदय (घ) दयालु और आज्ञाकारी

(5) 'अखंड आत्म भाव भरने' से - कवि का अभिप्राय है -

(क) सबको अपनाना (ख) सबमें आत्मीयता का भाव भर देना

(ग) सबको एकता के सुत्र में पिरोना (घ) उपर्युक्त सभी

अथवा

मेरा त्राण करो अनुदिन तुम यह मेरी प्रार्थना नहीं
बस इतना होवे करुणामय
तरने की दो शक्ति अनामय।
मेरा भार अगर लघु करके न दो सांत्वना नहीं सही।
केवल इतना रखना अनुनय
वहन कर सकूँ इसको निर्भय।
नत शिर होकर सुख के दिन में
तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में।
दुख रात्रि में करे वंचना मेरी जिस दिन निखिल मही
उस दिन ऐसा हो करुणामय
तुम पर करुँ नहीं कुछ संशय।

(1) अपने 'मन' के संबंध में कवि ईश्वर से क्या चाहता है? **1**

(क) भार हल्का कर दो (ख) भार समाप्त कर दो

(ग) भार वाला सामान कम कर दो (घ) भार उठाने की शक्ती दो

(2) कवि सुख के दिनों में भी ईश्वर को प्रतिक्षण याद रखना चाहता है, क्योंकि - **1**

(क) वह ईश्वर का भक्त है (ख) यह उसकी प्रतिज्ञा है

(ग) लोग प्रायः सुखों में ईश्वर को भूल जाते हैं (घ) पहचान बनाए रखने के लिए यह ज़रुरी है

(3) दुखों से घिर जाने और लोगों से ठगे जाने पर - **1**

(क) कवि का ईश्वर पर विश्वास डगमगा जाता है (ख) कवि ईश्वर पर संदेह नहीं करना चाहता

(ग) कवि ईश्वर की करुणा चाहता है (घ) कवि 'अनामय' रहना चाहता है

(4) 'मेरा त्राण करो' का आशय है **1**

(क) मेरी रक्षा करो (ख) मुझे निरोग करो

(ग) मुझे संपन्न बना दो (घ) मुझे निडर बना दो

(5) कवि के अनुसार सुखों के दिनों में ज़रूरी है - 1

(क) अभिमान से सिर ऊँचा रखना (ख) विनम्रता से सिर झुकाना

(ग) लज्जा से सिर झुकाना (घ) चुपचाप सुख भोग करना

11. किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए - **2.5x2=5**

(क) जनरल झिगालॉव का नाम सुनते ही ओचुमेलाव के विचारों में क्या परिवर्तन आया?

(ख) ''उनकी आँखों में आँसू देखकर मेरी माँ की आँखों में आँसू आ गए''- यह कथन लेखक ने किस संदर्भ में कहा है? अब कहाँ दुसरों के दुख में दुखी होने वाले' के आधार पर बताइए

(ग) चाजीन कौन था लेखक और उसके साथियों के पहुँचने पर चाजीन ने क्या किया व किस शालीनता से चाय पिलाई?

(घ) जाँबाज सवार कौन था? 'कारतूस' पाठ के आधार पर उसकी विशेषताएँ बताइए।

12. बढ़ती आबादी, मनुष्य की हवस, बारुद की विनाश लीलाओं ने प्राकृतिक संतुलन के साथ क्या खिलवाड़ किया है? इसके दुष्प्रभाव 'अब कहाँ दूसरों के दुख में दुखी होने वाले'..... पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए। **5**

अथवा

लेखक ने व्यवहारवादी लोगों के बारे में क्या कहा है? वे असली जीवन में आदर्शवादी लोगों से कैसे भिन्न है? 'गिन्नी का सोना' के आधार पर स्पष्ट कीजिए। **5**

13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

यह सब क्या हो रहा है? भीड़ को चीरते हुए ओचुमेलॉव ने सवाल किया - तुम सब लोग इधर क्या कर रहे हो? तुमने अपनी यह उँगली ऊपर क्यों उठा रखी है? चिल्ला कौन रहा था? ''हुजूर मैं तो चुपचाप चला जा रहा था,'' मुँह पर हाथ रखकर खाँसते हुए ख्यूक्रिन ने कहा - ''मुझे मित्री मित्रिच से लकड़ी लेकर कुछ काम निपटाना था, तब अचानक इस कम्बख्त ने अकारण मेरी उँगली काट खाई। माफ करें। आप तो जानते हैं मैं ठहरा एक कामकाजी आदमी .... मेरा काम भी एकदम पेचीदा किस्म का है। मुझे लग रहा है एक हफ्ते तक मेरी यह उँगली अब काम करने लायक नहीं हो पाएगी। तो हुजूर ! मेरी गुज़ारिश है कि इसके मालिकों से मुझे हरजाना तो दिलवाया जाए। यह तो किसी कानून में नहीं लिखा है हुजूर कि आदमखोर जानवर हमें काट खाएँ और हम उन्हें बरदाश्त करते रहें। अगर कोई इसी तरह काट खाना शुरु कर दे तो यह जिंदगी तो नर्क हो जाए.....''

(क) ख्यूक्रिन के साथ क्या दुर्घटना घटी? **1**

(ख) भीड़ को काबू में करने के लिए ओचुमेलॉव ने किस नीति का सहारा लिया? **2**

(ग) ख्यूक्रिन ने ओचुमेलॉव से हर्जाना दिलवाने की प्रार्थना क्यों की? **2**

अथवा

अकसर हम या तो गुजरे हुए दिनों की खट्टी-मीठी यादों में उलझे रहते हैं या भविष्य के रंगीन सपने देखते रहते हैं। हम या तो भूतकाल में रहते हैं या भविष्यकाल में। असल में दोनों काल मिथ्या हैं। एक चला गया है, दूसरा आया नहीं है। हमारे सामने जो वर्तमान क्षण है, वही सत्य है। उसी में जीना चाहिए। चाय पीते-पीते उस दिन मेरे दिमाग से भूत और भविष्य दोनों काल उड़ गए थे। केवल वर्तमान क्षण सामने था और वह अनंतकाल जितना विस्तृत था। जीना किसे कहते हैं?, उस दिन मालूम हुआ।

झेन परंपरा की यह बड़ी देन मिली है जापानियों को।

(क) जीवन का वास्तविक सत्य क्या है? **1**

(ख) प्राय: मनुष्य किस मन: स्थिति में जीते हैं? **2**

(ग) चाय पीते-पीते लेखक को क्या अनुभव हुआ? **2**

14. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए -**

(1) छाया भी कब छाया ढूँढ़ने लगती है? बिहारी के दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए - **1**

(2) 'आत्मत्राण' प्रार्थना अन्य प्रार्थना गीतों से भिन्न है कैसे? सिद्ध कीजिए। **2**

(3) 'दीपक' और 'प्रियतम' किसके प्रतीक हैं? कवयित्री दीपक से किस बात का आग्रह कर रही है? **2**

15. लेखक के अनुसार उन्हें स्कूल खुशी से भागे जाने की जगह न लगने पर भी कब और क्यों उन्हें स्कूल जाना अच्छा लगने लगता? **3**

अथवा

इफ़्फ़न की दादी की आत्मा ससुराल की किन पाबंदियों की वजह से सदा बेचैन रहती थी? वह अपने पीहर क्यों जाना चाहती थी? 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर बताएँ।

16. रामदुलारी ने टोपी को क्यों मारा? क्या टोपी ने अपनी माँ की बात मानी? **2**

खंड 'घ'

17. किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर लगभग 100 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए। **5**

(1) पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं

पराधीनता का अर्थ
पराधीनता की पीड़ा
स्वतंत्रता की रक्षा

(2) यदि मैं करोड़पति होता

मधुर सपना
इच्छाएँ
भावी योजनाएँ

(3) भारत में कॉमनवेल्थ खेल

खेलों में भारत का स्थान
कॉमनवेल्थ खेलों का भव्य आयोजन
भारत की उपलब्धियाँ

18. **पत्र-लेखन :**

आपके शहर में बिजली की अनियमितता से सब लोग परेशान है। विद्यार्थियों की परीक्षा सिर पर है। गरमी का प्रकोप कदम बढ़ा रहा है। बिजली विभागाध्यक्ष को अपनी कठिनाइयों का उल्लेख करते हुए समस्या निवारण हेतु पत्र लिखिए। **5**

अथवा

आपको 'यूथ फैस्टिवल' के लिए अपने विद्यालय की 'कविता-पाठ' प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीम तैयार करने का उत्तरदायित्व मिला है। पुस्तकालय में आप कुछ विशेष कवियों की पुस्तकें मँगवाना चाहते हैं। टीम प्रशिक्षक चुने जाने का धन्यवाद करते हुए व अपने प्रधानाचार्य को प्रस्तावित पुस्तकें मँगवाने का आग्रह करते हुए पत्र लिखिए। **5**

- o O o -